13. विश्वशान्ति

पाठ परिचय (Viswa Shanti)- आज विश्वभर में विभिन्न प्रकार के विवाद छिड़े हुए हैं जिनसे देशों में आन्तरिक और बाह्य अशान्ति फैली हुई है। सीमा, नदी-जल, धर्म, दल इत्यादि को लेकर स्वार्थप्रेरित होकर असहिष्णु हो गये हैं। इससे अशांति के वातावरण बना हुआ है। इस समस्या को उठाकर इसके निवारण के लिए इस पाठ में वर्तमान स्थिति का निरूपण किया गया है।

पाठेऽस्मिन् संसारे वर्तमानस्य अशान्तिवातावरणस्य चित्रणं तत्समाधानोपायश्च निरूपितौ । देशेषु आन्तरिकी वाह्या च अशान्तिः वर्तते । तामुपेक्ष्य न कश्चित् स्वजीवनं नेतुं समर्थः । सेयम् अशान्तिः सार्वभौमिकी वर्तते इति दुःखस्य विषयः । सर्वे जनाः तया अशान्त्या चिन्तिताः सन्ति । संसारे तन्निवारणाय प्रयासाः क्रियन्ते ।)

इस पाठ में वर्तमान संसार में अशांति का चित्रण और इसके समाधान को निरूपित किया गया है। देशों में आंतरिक और बाह्य अशांति है। हर कोई अपना जीवन जीने में असमर्थ है। पूरे विश्व में अशांति फैला हुआ है। यह दुख का विषय है। सभी लोग चिन्तित है। संसार में निवारण का प्रयास किया जा रहा है।

वर्तमाने ससारे प्रायशः सर्वेषु देशेषु उपद्रवः अशान्तिर्वा दृश्यते । क्वचिदेव शान्त वातावरणं वर्तते । क्वचित् देशस्य आन्तरिकी समस्यामाश्रित्य कलहो वर्तते, तेन शत्रुराज्यानि मोदमानानि कलहं वर्धयन्ति । क्वचित् अनेकेषु राज्येषु परस्परं शीतयुद्धं प्रचलति । वस्तुतः संसारः अशान्तिसागरस्य कूलमध्यासीनो दृश्यते ।

इस समय प्रायः संसार के सभी देशों में अशान्ति देखे जाते हैं। संयोग से ही कहीं शान्ति का वातावरण देखेने को मिलता है। किसी देश में आन्तरिक अव्यवस्था के कारण अशांति है तो कहीं शत्रु देश द्वारा अशांति फैलाया जा रहा है तो कहीं अनेक देशों में शीतयुद्ध चल रहा है। इस प्रकार सारा संसार ही अशांति के वातावरण में जी रहा है।

अशान्तिश्च मानवताविनाशाय कल्पते । अद्य विश्वविध्वंसकान्यस्त्राणि बहून्याविष्कृतानि सन्ति । तैरेव मानवतानाशस्य भयम् । अशान्तेः कारणं तस्याः निवारणोपायश्च सावधानतया चिन्तनीयौ । कारणे ज्ञाते निवारणस्य उपायोऽपि ज्ञायते इति नीतिः ।

अशांति मानवता के विनाश का कारण है। इस समय विनाशकारी अस्त्रों का निर्माण विशाल पैमाने पर हो रहा है, उससे ही मानवता के विनाश का भय बना हुआ है। अशांति के कारणों के निवारण

के उपायों पर ध्यानपूर्वक विचार किया जाना चाहिए। अशांति के कारणों का पता लगाते हुए उनके समाधान के उपायों का भी पता करना चाहिए।

वस्तुतः द्वेषः असहिष्णुता च अशान्तेः कारणद्वयम् । एको देशः अपरस्य उत्कर्षं दृष्ट्वा द्वेष्टि, तस्य देशस्य उत्कर्षनाशाय निरन्तरं प्रयतते । द्वेषः एवं असहिष्णुतां जनयति । इमौ दोषौ परस्परं वैरमुत्पादयतः । स्वार्थश्च वैरं प्रवर्धयति । स्वार्थप्रेरितो जनः अहंभावेन परस्य धर्मं जाति सम्पत्तिं क्षेत्रं भाषां वा न सहते ।

वास्तव में, ईर्ष्या एवं असहनशीलता अशान्ति के मुख्य दो कारण है। एक देश दूसरे देश की उन्नति अथवा विकास देखकर जलभुन जाते हैं, और उस देश को हानि पहुँचाने का प्रयास करने लगते हैं। द्वेष ही असहनशीलता पैदा करता है। इन दोनों दोषों के कारण शत्रुता जन्म लेती हैं। स्वार्थ दुश्मनी बढ़ाती है। स्वार्थ से अंधा व्यक्ति अहंकारवश दुसरों के धार्मिक, सामाजिक और भाषाई एकता सहन नहीं कर पातें।

आत्मन एव सर्वमुत्कृष्टमिति मन्यते। राजनीतिज्ञाश्च अत्र विशेषेण प्रेरकाः । सामान्यो जनः न तथा विश्वसन्नपि बलेन प्रेरितो जायते । स्वार्थोपदेशः बलपूर्वकं निवारणीयः। परोपकारं प्रति यदि प्रवृत्तिः उत्पाद्यते तदा सर्वे स्वार्थं त्यजेयुः। अत्र महापुरुषाः विद्वांसः चिन्तकाश्च न विरलाः सन्ति ।

वे निजी विकास को ही उत्तम मानते हैं। इस निकृष्ट विचार के मुख्य प्रेरक राजनेता हैं। सामान्य लोग ही नहीं, विशिष्ट जन भी बलपूर्वक प्रेरित किए जाते हैं। इसलिए स्वार्थी भावना को बलपूर्वक दूर करना चाहिए। यदि परोपकार के प्रति रूचि जग जाती है तब स्वतः सारे स्वार्थ मिट जाते हैं। यहाँ महापुरूष, विद्वान तथा चिन्तकों का अभाव नहीं है।

तेषां कर्तव्यमिदं यत् जने-जने, समाजे-समाजे, राज्ये राज्ये च परमार्थ वृत्तिं जनयेयुः । शुष्कः उपदेशश्च न पर्याप्तः, प्रत्युत तस्य कार्यान्वयनञ्च जीवनेऽनिवार्यम् । उक्तञ्च ज्ञानं भारः क्रियां विना । देशानां मध्ये च विवादान् शमयितुमेव संयुक्तराष्ट्रसंघप्रभृतयः संस्थाः सन्ति । ताश्च काले-काले आशङ्कितमपि विश्वयुद्धं निवारयन्ति ।

उनका कर्तव्य है कि वे हर व्यक्ति, हर समाज तथा हर देश में परोपकार की भावना का प्रचार करें। थोथा उपदेश काफी नहीं है, बल्कि वैसा आचरण भी अपनाना जरूरी है। क्योंकि कहा गया है कि. क्रिया के बिना ज्ञान बोझ स्वरूप होता है। दो देशों के आपसी विवाद को खत्म करने के लिए संयुक्त राष्ट संघ आदि संस्थाएँ हैं। यहीं समय- समय पर संभावित विश्व युद्ध को दूर करती है।

भगवान बुद्धः पुराकाले एव वैरेण वैरस्य शमनम् असम्भवं प्रोक्तवान् । अवैरेण करुणया मैत्रीभावेन च वैरस्य शान्तिः भवतीति सर्वे मन्यन्ते ।। भारतीयाः नीतिकाराः सत्यमेव उद्घोषयन्ति - अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

प्राचीन काल में भगवान बुद्ध ने कहा था, दुश्मनी से दुश्मनी को खत्म करना संभव नहीं है। मित्रता एवं दया से शत्रुता भाव को शांत करना संभव है। ऐसा सबका मानना है। भारतीय नीतिज्ञों ने सच ही कहा है। यह मेरा है, वह दुसरों का है ऐसा नीच विचारवाले मानते हैं। उदारचित वाले अर्थात् महापुरूषों के लिए सारा संसार ही अपने परिवार जैसा है।

परपीडनम् आत्मनाशाय जायते, परोपकारश्च शान्तिकारणं भवति । अद्यापि परस्य देशस्य संकटकाले अन्ये देशाः सहायताराशि सामग्री च प्रेषयन्ति इति विश्वशान्तेः सूर्योदयो दृश्यते ।

दूसरों के कष्ट पहुँचाने से अपना ही नुकसान होता है और दूसरों के सहयोग से शांति मिलती है। आज भी किसी दूसरे देश के संकट में शहायता राशि भेजी जाती है। इससे विश्व शांति की आशा प्रकट होती है।

1.' 'विश्वशान्तिः' पाठ का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

उत्तर⇒ विश्वशान्तिः शब्द का शाब्दिक अर्थ विश्व की शान्ति है। आज सर्वत्र ईर्ष्या, द्वेष, असहिष्णुता, अविश्वास, असंतोष आदि जैसे दुर्गुण विद्यमान हैं। ये दुर्गुण जहाँ विद्यमान हो वहाँ की शान्ति की कल्पना कैसे की जा सकती है। शान्ति भारतीय दर्शन का मूल तत्व है। यह शान्ति धर्ममूलक है। धर्मो रक्षित रक्षितः-ऐसा प्राचीन संदेश विश्व का अस्तित्व और रक्षा के लिए ही प्रेरित है। इस पाठ का मुख्य उद्देश्य, व्यक्ति, समाज और राष्ट्रों को आपसी द्वेष, असंतोष आदि से दूर कर शान्ति, सहिष्णुता आदि का पाठ पढ़ाना है।

2. अशान्ति का प्रमुख कारण कौन-कौन है ? तथा इसका निदान क्या है ?

उत्तर⇒ अशान्ति का प्रमुख कारण द्वेष और असहिष्णुता है। आज हर देश दसेरे देश की उन्नति को देखकर ईर्ष्या की अग्नि से जल रहा है। उसकी उन्नति को नष्ट करने के लिए छल-प्रपंच आदि का सहारा ले रहा है। आयुधों की होड़ में आज मानवता विनष्ट हो रही है। निर्वैर से शान्ति की कल्पना

की जा सकती है। अतः परोपकार, सहिष्णुता आदि को धारण कर ही अशान्ति को दूर किया जा सकता है।

3. विश्वशान्तिः पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें।

उत्तर⇒ आज विश्वभर में विभिन्न प्रकार के विवाद छिड़े हुए हैं जिनसे देशों में आंतरिक और बाह्य अशांति फैली हुई है । सीमा, नदी-जल, धर्म, दल इत्यादि को लेकर स्वार्थप्रेरित होकर असहिष्णु हो गये हैं। इससे अशांति का वातावरण बना हुआ है। इस समस्या को उठाकर इसके निवारण के लिए इस पाठ में वर्तमान स्थिति
का निरूपण किया गया है।

4. वर्तमान में विश्व की स्थिति का वर्णन करें।

उत्तर⇒ वर्तमान में प्रायः विश्व के सभी देशों में अशांति और कलह छाए हुए हैं। कुछ देशों में आंतरिक समस्याएँ हैं तो कुछ देशों में परस्पर शीतयुद्ध चल रहे हैं। संपूर्ण संसार में अशांति के कारण मानवता का विनाश हो रहा है । विध्वंसकारी अस्त्रों द्वारा मानवता के विनाश का भय सर्वत्र व्याप्त है।

5. अशांति के मूल कारण क्या हैं ?

उत्तर⇒ वास्तव में अशांति के दो मूल कारण हैं-द्वेष और असहिष्णुता । एक देश दूसरे देश की उन्नति देख जलते हैं, और इससे असहिष्णुता पैदा होती है। ये दोनों दोष आपसी वैर और अशांति के मूल कारण हैं।

6. संसार में अशांति कैसे नष्ट हो सकती है ? (अथवा, विश्व अशान्ति का क्या कारण है ? तीन वाक्यों में हिन्दी में उत्तर दें।

उत्तर⇒ अशांति के मूल कारण हैं-द्वेष और असहिष्णुता । स्वार्थ से यह अशांति बढ़ती है। इस अशांति को वैर से नहीं रोका जा सकता । करुणा और मित्रता से ही वैर नष्ट कर संसार में शांति लाई जा सकती है।

7. विश्व शांति के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर⇒ केवल उपदेश से विश्व शांति नहीं होगी। हमें उपदेशों के अनुसार आचरण करना होगा । हमलोग जानते हैं कि क्रिया के बिना, अर्थात व्यवहार के बिना ज्ञान भार-स्वरूप है । वैर कभी भी वैर से शांत नहीं होता। हमें निर्वैर दया, परोपकार, सहिष्णुता और मित्रता का भाव दूसरों के प्रति रखनी होगी, तभी विश्वशांति हो सकती है।

8. विश्व में शांति कैसे स्थापित हो सकती है ?

उत्तर⇒ विश्व में शांति का आधार एकमात्र परोपकार है। परोपकार की भावना मानवीय गुण है । संकटकाल में सहयोग की भावना रखना ही लक्ष्य हो तभी हम निर्वैर, सहिष्णुता और परोपकार से शांति स्थापित कर सकते हैं।

9. 'विश्वशांति' पाठ के आधार पर भारतीय दर्शन का मूल तत्त्व बतलाएँ।

उत्तर⇒ भारतीय दर्शन का मूल तत्त्व शांति है। इसमें संदेह नहीं, क्योंकि धर्म का आधार भी शांति ही है। इसी भाव से विश्व की रक्षा तथा कल्याण संभव है इसलिए हमें जन जागरण द्वारा सहिष्णुता, परोपकार और निर्वैर के महत्त्व पर प्रकाश डालना चाहिए।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. 'विश्वशांति' पाठ में किस वातावरण का वर्णन है?

(A) शांति

(C) शिक्षा

(B) अशांति

(D) युद्ध

Ans – (B)

2. 'विश्वशांति' किस प्रकार का पाठ है?

(A) निबंध

(B) नाटक

(C) कथा

(D) पद्य

Ans – (A)

3. अशांति रूपी सागर के किनारे कौन है?

(A) मानव

(B) दानव

(C) संसार

(D) छात्र

Ans – (C)

4. अशांति किसके विनाश का कारण हैं ?

(A) मानवता

(B) लड़कपन

(C) बूढ़ापा

(D) युवा

Ans – (A)

5. अशांति के कितने कारण हैं?

(A) एक

(B) तीन

(C) दो

(D) चार

Ans – (C)

6. देश में अशांति के प्रेरक कौन हैं?

(A) विद्वान

(B) राजनेता

(C) छात्र

(D) गुरु

Ans – (B)

7. शांति का कारण क्या है?

(A) स्वार्थ

(C) परमार्थ

(B) अशांति

(D) परोपकार

Ans – (D)

8. कैसा चरित वाले संसार को परिवार मानते हैं?

(A) उदार

(B) अनुदार

(C) छात्र

(D) गुरु

Ans – (A)

9. वैर से वैर का शमन क्या है?

(A) संभव

(C) नाम्भव

(B) असंभव

(D) साम्भव

Ans – (B)

10. परपीडन किस लिए होता है?

(A) पुण्य के लिए

(B) पाप के लिए

(C) नाश के लिए

(D) धर्म के लिए

Ans – (B)

11. एक देश दूसरे देश को क्या देखकर जलता है?

(A) अपकर्ष

(B) उत्कर्ष

(C) आकर्ष

(D) परापकर्ष

Ans – (B)

12. वस्तुतः इस समय संसार किस महासागर के कूलमध्य स्थित दिख रहा है?

(A) प्रशान्त महासागर

(B) हिन्द महासागर

(C) अशान्ति महासागर

(D) अटलांटिक महागसार

Ans – (C)

13. "वैरेण वैरस्य शमनम् असम्भवम्" यह किसकी उक्ति है?

(A) महात्मा बुद्ध

(B) भगवान महावीर

(C) चन्द्रगुप्त

(D) कर्ण

Ans – (A)

14. देशों के बीच कौन-सा युद्ध चल रहा है?

(A) ग्रीष्म

(B) अंधकार

(C) युद्ध

(D) शीत

Ans – (D)

15. शत्रु राज्यों में क्या बढ़ रहा है?

(A) कलह

(B) ज्ञान

(C) सत्य

(D) कोलाहल

Ans – (A)

16. दुख का विषय क्या है?

(A) सार्वभौमिक अशांति

(B) हिंसा

(C) युद्ध

(D) कोलाहलं

Ans – (A)

17. आज विध्वंस के लिए किसका निर्माण हो रहा है?

(A) अस्त्रों का

(B) पुस्तकों का

(C) कमल

(D) नगर

Ans – (A)

18. दूसरों को दुख देने से किसका नाश होता है?

(A) विद्वान

(B) अपना

(C) छात्र

(D) गुरु

Ans – (B)

19. संकट के समय एक देश दूसरे देश को क्या करते हैं?

(A) युद्ध

(B) अशांति

(C) सहायता

(D) शांति

Ans – (C)

20. विश्व को नष्ट करने के लिए किसका निर्माण हो रहा है?

(A) बंदुक

(C) शास्त्र

(B) अस्त्र

(D) ग्रंथ

Ans – (B)

21. एक देश दूसरे देश की उन्नति को देखकर क्या करते हैं?

(A) प्रेम

(B) लड़ाई

(C) ईर्ष्यां

(D) शांतिवार्ता

Ans – (C)

22. ईर्ष्या से किसका जन्म होता है?

(A) असहनशीलता

(C) युद्ध

(B) सहनशीलता

(D) शांदि

Ans – (A)

23. उदारचरित वाले संसार को क्या मानते हैं?

(A) परिवार

(B) मंदिर

(C) देवता

(D) छात्र

Ans – (A)

24. “यह मेरा है, यह तुम्हारा है।" ऐसा कौन मानता है?

(A) विद्वान

(B) छात्र

(C) लघुबुद्धि वाला

(D) अग्रसोची

Ans – (C)

25. वैर से किसका नाश असंभव है?

(A) वैर का

(B) शांति

(C) अशांति

(D) अवैर का

Ans – (A)

26. हम सबों को किसका त्याग करना चाहिए?

(A) परमार्थ

(B) नि:स्वार्थ

(C) विवाद

(D) स्वार्

Ans – (B)

27. किसके बिना ज्ञान बोझ है?

(A) पुस्तक

(B) राजनेता

(C) क्रिया

(D) विद्या

Ans – (C)

28. असहिष्णुता को जन्म कौन देता है?

=(A) प्रेम

(B) करुणा

(C) द्वेष

(D) क्षमा

Ans – (C)

29. ईर्ष्या और असहिष्णुता किसको उत्पन्न करते हैं?

(A) शांति

(B) अशांति

(C) सुख समृद्धि

(D) प्रेम

Ans – (B)

30. अपने और पराये की गणना कौन करता है?

(A) विशाल हृदय वाला

(B) संकुचित हृदय वाला

(C) दुर्जन

(D) सज्जन

Ans – (B)

31. शत्रुता को कौन बढ़ाता है?

(A) स्वार्थ

(B) परमार्थ

(C) परोपकार

(D) अहिंसा

Ans – (A)

32. अवैर, करुणा और मैत्रीभाव से किसकी उत्पत्ति होती है?

(A) अशांति की

(B) शांति की

(C) उपद्रव की

(D) स्थिरता

Ans – (B)